लेखकों के बारे में

कुमार गंधर्व

(सन् 1924 -1992)

जन्म सुलेभावि, ज़िला बेलगाँव (कर्नाटक) में। मूल नाम शिवपुत्र सढ़िदारमैया कामकली। मात्र 10 वर्ष की उम्र में गायकी की पहली मंचीय प्रस्तुति। उनके संगीत की मुख्य विशेषता मालवा लोक धुनों और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सुंदर सामंजस्य है जिसका अद्भुत नमूना कबीर के पदों का उनके द्वारा गायन है। लोक में रचे-बसे लुप्तप्राय पदों का संग्रह कर और उन्हें स्वरों में बाँधकर कुमार गंधर्व ने इन्हें अंतर्राष्ट्रीय पहचान दी। इन्हें कालिदास सम्मान और पद्मविभूषण सहित बहुत से सम्मान से अलंकृत किया गया है।

अनुपम मिश्र

(सन् 1948-2016)

जन्म वर्धा (महाराष्ट्र) में। पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर बीस पुस्तकों का लेखन जिनमें **आज भी खरे हैं तालाब** और **राजस्थान की रजत बूँदें** विशेष चर्चित। पर्यावरण संबंधी कई आंदोलनों से न केवल घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं बल्कि लोगों को जागरूक करने के लिए मुहिम भी चलाई। सन् 1977 से गांधी शांति प्रतिष्ठान के पर्यावरण कक्ष से संबद्ध।

बेबी हालदार

(सन् 1974 अनुमानित)

जम्मू कश्मीर के किसी स्थान पर जन्म, जहाँ सेना की नौकरी में पिता तैनात थे। तेरह वर्ष की उम्र में दुगुनी उम्र के व्यक्ति से विवाह के कारण 7वीं कक्षा में पढ़ाई छोड़नी पड़ी। 12-13 वर्षों बाद पति की ज़्यादतियों से परेशान होकर तीन बच्चों सहित पति का घर छोड़ दुर्गापुर से फ़रीदाबाद आ गईं। कुछ समय बाद गुड़गाँव चली आईं। बांग्ला में लिखी एवं हिंदी में अनूदित **आलो-आँधारि** एक मात्र पुस्तक। वर्तमान में गुड़गाँव में घरेलू नौकरानी के रूप में कार्यरत।

डॉ. शंकरलाल टोडर

श्री शंकरलाल टोडर का जन्म 05-12-1942 को पुरेना धामतरी में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री फूलचंद टोडर था। इन्होंने बी.ए.,डी.एच.बी. और आयुर्वेदरत्न की डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात् ये शिक्षा के क्षेत्र् में आए और एक शिक्षक के रुप में अपना जीवन प्रारंभ किया। पदोन्नति प्राप्त करते हुए पूर्व माधयमिक शाला में प्रधाानाधयापक के पद पर पहुँचे।

श्री टोडर जी सन् 1927 से सत्यनाम सेवा संघ के प्रांतीय संचालक हैं। इनका स्थायी निवास स्थान ग्राम-देवपुरी व्हाया-माना कैम्प, जिला-रायपुर द्धछ.ग.ऋ है।

डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा

जीवन परिचय-

समाज सेवी एवं भारतीय जन आन्दोलन के अधयक्ष डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा का जन्म 1931 को हुआ। उनकी शिक्षा विक्टोरिया कॉलेज ग्वालियर और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। प्रारंभ में डॉ. शर्मा ने बिड़ला कॉलेज, पिपलानी में व्याख्याता के पद पर कार्य किया। सन् 1956 से वे भारतीय प्रशासनिक सेवा में आए। बहुत दिनों तक वे बस्तर में कलेक्टर के पद पर भी कार्य करते रहे। वहाँ वे आदिवासियों के संपर्क में आए। उन्होंने उनके जीवन का गहराई से अधययन किया। उन्होंने आदिवासियों के जीवन की विषमताओं और विसंगतियों को दूर करने के लिए अनेक योजनाएँ बनाईं और उनका क्रियान्वयन किया। तब से वे निरन्तर आदिवासी विकास कार्यक्रमों के साथ जुड़े हुए हैं। प्रशासनिक सेवा से मुक्त होने के बाद उन्होंने नार्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी शिलाँग में कुलपति के पद का दायित्व संभाला। वे कुछ समय अनुसूचित जाति एवं जनजाति के आयुक्त पद पर भी रहे। तब उन्होंने आदिवासियों के जीवन पर आधाारित विलक्षण रिपोर्ट, राष्ट्रपति महोदय को सौंपी। इस समय डॉ. शर्मा भारत जन-आदन्दोलन के अधयक्ष हैं और आदिवासी अंचल के लोगों के जीवन में सहभागी बन कर संघर्षरत हैं।

आओ हम मिलकर कदम बढ़ाऐं शौचालय के उपयोग हेतु जागरुकता लाऐं

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

राज्य स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण), छत्तीसगढ़
पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मूल्य – ₹ 30.00